... और बालेश्वरी आ गई

गट्टासिल्ली नगरी में आयोजित भाषा शिविर का एक अनुभव

श्रीदेवी

बच्चों के साथ अलग-अलग मंचों पर उनके लिए नए तरह के अनुभवों के साथ काम करना और उन्हें समझने की प्रक्रिया निरन्तरता में होती रही है। गर्मी की छुट्टियों में समुदाय के लोग और प्राथमिक शाला के शिक्षकों के साथ मिलकर पढ़ना-लिखना सीखने के लिए 15 दिवसीय भाषा शिविर का आयोजन किया गया। इसकी पूर्व तैयारी का एक स्तर अकादमिक था तो दूसरा समुदाय के साथ नियमित संवाद था। भाषा शिविर में छह साल से 15 साल के बालिका और बालक दोनों शामिल थे। इस शिविर में हम और बच्चे सुबह के तीन घण्टे ही काम करते थे। कई बच्चे मज़दूरी में अपने परिवार की मदद करते थे। हम जैसे ही गाँव पहुँचते कई बच्चे हमारा इन्तज़ार कर रहे दिखते, वहीं शुरू के दो-तीन दिन हमें बच्चों को बुलाने के लिए जाना पड़ा। हमारे द्वारा रोज़ बुलाने के कारण चौथे दिन से लगभग सारे बच्चे रोज़ आने लगे।

शिविर की योजना इस प्रकार थी

पहले घण्टे में सब बच्चों के साथ मिलकर कुछ कविताएँ बोलना, उनके नाम के साथ अलग-अलग तरह की गतिविधियाँ करना जैसे कार्य शामिल थे। दूसरे और तीसरे घण्टे में बच्चे जो काम पसन्द करते उसपर काम किया जाता, जैसे– रंग भरना, बातें करना, कहानी सुनना, थोड़ा-सा पढ़कर लिखना। कुछ बालिकाएँ जो किशोरवय थीं, वे लड़कों के साथ बैठना पसन्द नहीं करती थीं और अकसर मेरे आसपास ही रहतीं। इसे देखते हुए उन बालिकाओं की सुविधा के लिए एक अलग समूह बनाया गया। उस समूह के बच्चों के साथ मैं ही काम करती थी।

इन सब बच्चों में एक बालिका थी, जिसका नाम बालेश्वरी था। वह रोज़ शिविर स्थल के पास लगे महुए के पेड़ की ओट से सारी गतिविधियों को ध्यान से देखती थी। शिविर की उस दिन की कार्यवाही को समाप्त कर जब हम चले जाते, वह अपने साथियों से उन गतिविधियों के बारे में बात करती। ऐसा तीन चार दिन तक चलता रहा। एक दिन हम बैठकर महुए के पेड़ के बारे में बातचीत कर रहे थे। बच्चियाँ, महुए के फूल कब फूलते हैं, उसकी ख़ुशबू, फूल का एकत्रीकरण और इकट्ठे किए गए महुए को बाज़ार ले जाकर कोचिए को बेचना आदि पर विस्तार से बातचीत कर रही थीं। इस बातचीत को सुनकर बालेश्वरी भी हमारे समूह में आई और महुए के बारे में अपना अनुभव सुनाया कि एक बार वह महुए के पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रही थी, दूर से उसने अपने बाबू यानी पिता को आते हुए देखा और वह पेड़ के ऊपर से कूद गई। उसके कूद जाने के कारण पेड़ से महुए के कुछ और फूल झड़ गए। शुरुआत में वह बहुत धीमी आवाज़ में बोला करती थी। मुझे दो तीन बार उसे अपनी बात को दोहराने के लिए कहना पड़ता था। बाक़ी समूह को उसकी बात मैं ही सुनाकर बताती थी। उस दिन के बाद से बालेश्वरी शिविर में रोज़ आने लगी। जो काम अच्छा लगता, उसे करती और अपनी हर बात कहती। हमने अन्तिम दिन शिविर पर बच्चों से कुछ बातचीत की कि इसमें उनको क्या अच्छा लगा, और क्या होता तो उन्हें अच्छा लगता?

इसपर बालेश्वरी ने कहा, 'तूमन चिढ़ात नई हो', अर्थात आप लोग चिढ़ाते नहीं हो। इसलिए मुझे यहाँ पढ़ना अच्छा लगता है। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात है कि बच्चे अपने सम्मान के प्रति बहुत सचेत होते हैं। विद्यालय की कक्षा हो या कोई अनौपचारिक शिक्षण स्थल, सीखने वाले का सम्मान पहली शर्त है।

शिविर के दौरान अपनी किताबों के बारे में बताते हुए वह कहती है, 'किताब में गाँव के बारे में कुछ नहीं लिखा होता। किताब जैसन कहानी होथे ऐसन हमर डोकरी दाई नई बताए।' अर्थात किताब में जिस तरह की कहानियाँ लिखी होती हैं ऐसी कहानियाँ हमारी दादी हमें नहीं बतातीं। उसकी इस बात में पाठ्यपुस्तकों में लोककथाओं के अभाव को बताने के साथ-साथ बच्चों के जीवन से किताबों का न जुड़ना भी दिख रहा था।

बालेश्वरी के बारे में

बालेश्वरी के माता-पिता भूमिहीन कृषि मज़दूर हैं। मज़दूरी से ही अपना और अपने बच्चों का जीवन यापन करते हैं। सांस्कृतिक रूप से वे गोंड आदिवासी हैं जो प्रकृति से प्राप्त भोजन के पदार्थों का सेवन करते हैं। मौसम के अनुसार उपलब्ध वनोपज को एकत्रित करना और उन्हें स्थानीय बाज़ार के कोचिए (बिचौलिए) को बेच देना, यही उनकी जीवन शैली है।



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

श्रीदेवी ने पण्डित रविशंकर शुक्ल महाविद्यालय से साहित्य और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। पिछले पन्द्रह वर्षों से प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। प्रमुख रूप से शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य, और प्रारम्भिक साक्षरता में रुचि है।

सम्पर्क : sreedevi@azimpremjifoundation.org